आज़ादी का अमृत महोत्सव

RAS KALA MANCH
SAFIDON (JIND) HARYANA

सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक

रवि मोहन
निर्देशक

स्थानः
डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम, PIET कॉलेज
समालखा (पानीपत) हरियाणा
वीरवार, 24 मार्च, 2022 सांय 6: 00 बजे

प्रस्तुति - रास कला मंच, सफीदों (जींद) हरियाणा
सम्पर्क सूत्र - 9215512300

नाटककार के बारे में –

सुरेन्द्र वर्मा हिन्दी के अग्रणी साहित्यकारों में से एक हैं। उनका नाटक 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' (1972) बहुत प्रसिद्ध हुआ था। इस नाटक का छ: भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ था। सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में यौन-चेतना के चित्रण के साथ-साथ कतिपय स्थलों पर उसकी जनाकांक्षा, विडंबना व विद्रूपता का भी प्रयोग हुआ है, जिसमें विचार और व्यवस्था विमर्श की उपस्थिति है। वे ऐसे नाटककार हैं जिन्होंने किनारे बैठकर जीवन की थाह को नहीं समझा, बल्कि वे गहरे उतरते हैं और जीवन की ऊपरी चकाचौंध के भीतर के स्याह अँधेरे को बख़ूबी बयां करते हैं। सुरेन्द्र वर्मा ने एक नाटककार के रूप में शुरुआत की थी। उनका नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा के साथ लंबा संबंध रहा है। उनके लघु कथाओं, व्यंग्य, उपन्यास और नाटकों के लगभग पंद्रह शीर्षक प्रकाशित हुए हैं। वर्ष 1993 में सुरेन्द्र वर्मा को 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार' और 1996 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' जबकि 2016 में 'व्यास सम्मान' से सम्मानित किया गया है।

नाटक के बारे में-

ओकाक्क मल्ल देश का शासक है। जिसके पास सारी सुविधाएं हैं और वो शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट है पर नपुंसक है।उसका विवाह 5 साल पहले एक दरिद्र कन्या शीलवती के साथ उसके ही मंत्री परिषद द्वारा करवाया गया। परंतु ओकाक्क शीलवती को दांपत्य सुख नहीं दे सका। जिसकी वजह से उसकी कोई संतान नहीं है। फिर मंत्रिपरिषद ये निर्णय करती है कि नियोग विधि के द्वारा उत्तराधिकारी प्राप्त करेंगे। इसके लिए वो ओकाक्क और शीलवती की सहमति लेते हैं। शीलवती धर्मनटी बनकर अपने पूर्व प्रेमी का चुनाव करती है। शीलवती को ये आभास होता है कि वो 5 साल तक शारीरिक सुख से वंचित रही। दूसरे दिन प्रातः काल शीलवती ओकाक्क और मंत्रिपरिषद को स्त्री को एक साधन के समान उपयोग करने की बात रखती है। साथ ही साथ वो ये घोषणा करने को कहती हैं की एक सप्ताह बाद फिर वो धर्मनटी बनकर राजप्रांगण में उतरेंगी। ओकाक्क उसे धर्म नटी से कामनटी बनकर लौटने का विशेषण देता है। इस तरह से शीलवती स्त्री मन और शारीरिक सुख की आवश्यकताओं को बताती है।

निर्देशकीय

मैंने ये नाटक 8 साल पहले पढ़ा था और तब से इस नाटक का मंचन करने की तीव्र इच्छा थी। मैं सुरेंद्र वर्मा की लेखनी से प्रभावित रहा। ये अपनी कृतियों में मानवीय भावनाओं और मानसिक खींचतान का बखूबी विवरण करते हैं। मैं इस नाटक की स्थिति और वर्णित परिस्थिति से प्रभावित रहा। सुरेंद्र वर्मा ने इस नाटक में बड़ी ही खूबसूरती से स्त्री मन तथा उसकी इच्छाओं का वर्णन किया है। स्त्री और पुरुष के संबंधों तथा उसकी जटिलता मुझे अपनी ओर खींचती है। ओकावक की नपुंसकता जो उसे अपने अधूरे पन का आभास हर बार करवाता है। शीलवती की शारीरिक सुख पाने की इच्छा और उसके पहले की भूत काल की परिस्थितियां, प्रतोष का उसके प्रति प्रेमा।ये सब बहुत सम सामायिक हैं जो मुझे इसे मंचित करने के लिए प्रेरित करता है। मैं मानता हूं कि स्त्री मन को एक पुरुष कभी नहीं जान पाता है क्योंकि उसकी गहराई इतनी है कि कहीं कोई थाह नहीं पा सकता। जैसे कि गिरीश कर्नाड ने अपने नाटक नाग मंडल, चंद्रशेखर कंबार ने अक्स तमाशा और मोहन राकेश ने अपने नाटक आधे - अधूरे में लिखा है।

गीतकार- सुभाष शर्मा जी

सुभाष शर्मा का जन्म 1948 हरियाणा के करनाल ज़िले मे घरोंडा नाम के एक छोटे से कस्बे मे हुआ। हरियाणा सरकार के बिज़ली विभाग से 2006 मे ये प्रथम श्रेणी अधिकारी के रूप मे रिटायर हुए। गीतकार के रूप मे इन्होने अपनी शुरुआत केवल 14 वर्ष की आयु (1962) मे ही कर दी थी। आपकी विशेष रुचि देश-भक्ति और देशहीत मे लिखने की रही है। बाद मे आपने फिल्मों व एल्बमों के लिए भी लिखना शुरू किया। इनके द्वारा लिखे गए गीत बॉलीवुड के विभिन्न गायकों व गायिकाओं ने गाये। उनमे से प्रमुख हैं , सुरेश वाडेकर ,सोनू निगम , विनोद सहगल , महेन्द्र कपूर , शान , जावेद अली व सुनिधि चौहान , सपना अवस्थी और मधु श्री , इत्यादि शामिल है।
आपने रामानन्द सागर द्वारा बनाई गये रामायण सिरियल का हरियाणवी मे अनुवाद हरियाणा न्यूज़ चैनल के लिए किया। आपने तहलका चैनल के गीत सुरीले बोल सुरीले , कहानी एक गाँव की के शीर्षक गीत भी लिखे है। हरियाणा सरकार के नंबर वन हरियाणा शीर्षक के नाम से लगभग 85 विज्ञापनो का लेखन आपने किया है। आपने " नशे की मार " फिल्म के गीत , कहानी पटकथा और संवाद लिखे। आप द्वारा लिखी गयी फिल्म " सनम फिर मिलेंगे " निर्माणाधीन है। आपने रास कला मंच व कई महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों की नाट्य प्रस्तुतियो के लिए गीत लिखे। उनमे से मुख्य तौर पर अक्स तमाशा , नागमंडल , सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक , सुगंधी , हीर रांझा , और चंदू भाई नाटक करते है के गीत शामिल है।

संगीतकार - श्रीधर नागराज

भारत में श्रीधर नागराज रंगमंच के लिए रंग संगीत का एक बड़ा नाम है। जिनका जन्म १० जुलाई १९८२ को हुआ। बचपन से ही उनकी परवरिश उनके माता-पिता द्वारा संगीतमय माहौल में हुई और अपनी माता तापसी नागराज को अपना पहला गुरु बनाया। उन्होने ना सिर्फ ज्ञान अपितु संगीत की शिक्षा जीवन भर जारी रखी। उन्होने चंद्रशेखर सेन गुप्ता, उस्ताद हज़बूल कबीर व हुसैन बंधु (जयपुर) से गायन में प्रशिक्षण लिया व पं॰ रविशंकर शुक्ला और अनिल मोदु जी के सानिध्य में तबला सीखा। उन्होने युवा उम्र से ही शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत व पश्चिमी संगीत और विभिन्न नाट्य समूहों के लिए संगीत रचना शुरू कर दी थी। जिसके परिणामस्वरूप उन्होने नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के लिए संगीत रचना की। आज तक उन्होने लगभग तीस नाट्य समूहों के लिए संगीत रचना की है और विभिन्न संस्थानो में गायन विशेषज्ञ है। उन्होने रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि ली व मास कम्यूनिकेशन में डिप्लोमा व स्नातकोत्तर की उपाधि ली और गायन में तबला में संगीत विशारद हुए। उनकी उपलब्धियों में बॉलीवुड फिल्मों में उनका योगदान व गानो की एलबम बनाने वाले गायकों जैसे शान, अनूप जलोटा, प्राजक्ता शूकरे, अभिजीत व जर्मनी के राफेल ट्रामोंटाना के साथ उनका योगदान शामिल है।

पात्र-परिचय

मंच पर

ओकावक- शेखर सिंह/ धीरज शर्मा
महत्तरिका-शिवानी दुबे
राजपुरोहित- अजित कुमार निशांत
प्रतोष-आशीष सैनी/मुकेश कुनियाल
कोरस - रचना सिंह, अशोक कुमार
श्वेता सिंह, अजय, चीनू करानिया

शीलवती-अंकिता
महामात्य- सुरेश निर्वाण /सोहन
महाबलाधिकृत- अभिमन्यु /आकाश बालियान
ओवकाक अवस – प्रेम नागर फराज़ सिद्दिकी

मंच परे

मंच निर्माण-दीपक शर्मा
गीतकार- सुभाष शर्मा
संगीत संचालन- आकाश बालियान /सुरेश निर्वाण
वस्त्र विन्यास- शिवानी दुबे योगिता शर्मा
रूपसज्जा- यशुदास
मंच प्रबंधक- सुरेश निर्वाण
मंच सहायक- आकाश बालियान,अजित कुमार,प्रदीप भाटिया, गौरव सक्सेना
सहायक निर्देशक- कमलदीप खटक

प्रकाश व्यवस्था- कमलदीप खटक/पवन भारद्वाज
संगीत निर्देशन- श्रीधर नागराज

प्रस्तुति - रास कला मंच, सफीदों (जींद) हरियाणा
सम्पर्क सूत्र - 9215512300